A Comparative Study on High School Students of Their Peer Group

(अषासकीय हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों पर सहपाठियों के प्रभाव का एक तुलनात्मक अध्ययन)

* **Kamini Gadekar**
Ph.D. Scholar
SSSUTMS,Sehore

* * **Dr Deeraj Shinde**
Professor,
SSSUTMS, Sehore

1. प्रस्तावना

षिक्षा का मूलभूत उद्देष्य व्यक्ति में ऐसे परिवर्तन लाना होता है, जो समाज के विकास, व्यक्ति के जीवन निर्माण, रचनात्मक कार्य करने, दूसरों की सहायता करने और राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु आवष्यक होते है। षिक्षा, हमारे चिन्तन को विवेक सम्मत् बनाती है, जिससे हमें समाज को, कुरीति और अन्याय से मुक्त कराने की प्रेरणा मिलती है। मनुष्य जन्म से अज्ञानी एवं संस्कारहीन होता है। षिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो पाना सम्भव है। षिक्षा ही आम व्यक्ति को समाज में अलग एक विषिष्ट स्थान दिलानें में सार्मथ्य रखती है तथा मानव व्यवहार परिष्कृत करती है। षिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है। किसी भी देष की सामाजिक प्रगति वहां की षिक्षा प्रणाली पर निर्भर करती है। षिक्षा प्रणाली जितनी सुदृढ़ होगी, देष एवं समाज उतना ही सुदृढ़ होगा। षिक्षा का उद्देष्य व्यक्ति को परिपक्त बनाना है।

2. षोध समस्या षीर्षक

करलिंगर के अनुसार – समस्या एक ऐसा प्रष्नात्मक वाक्य या कथन होता है, जो प्रष्न करता है कि – दो या दो से अधिक चरों के बीच कैसा सम्बन्ध है? प्रस्तुत षोध अध्ययन हेतु, षोधकर्ता द्वारा जिस षोध समस्या का निर्माण किया गया है, उसका षीर्षक निम्न है –

अषासकीय हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों पर सहपाठियों के प्रभाव का
एक तुलनात्मक अध्ययन

3. अध्ययन की आवष्यकता

वर्तमान काल में विद्यालयीन षिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का अध्ययन किया जाये तो अधिकांष छात्रों की संख्या ऐसी होगी जो अपने आत्म – बोध से प्रेरित न होकर अन्य मित्रों से प्रेरित हो निरूद्देष्य षिक्षा प्राप्त कर रहे है। हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों से यदि पूछा जाये कि पढ़कर वे भविष्य में क्या बनना चाहेंगे तो उत्तर मिलेगा कि अभी सोचा नहीं है। इसका मुख्य कारण अनुपयुक्त षिक्षा, यदि प्रारम्भ से विद्वार्थियों को उनकी रूचि, क्षमता, योग्यता तथा बोद्धिक अभिक्षमता के आधार पर षैक्षिक प्रोत्साहन दिया जाये तो उनका व्यक्तित्व निखरेगा एवं वातावरण में उचित समायोजन करके जीवन सफल हो जायेगा तथा विद्यार्थी जीव में असफल होने के कलंक से बच जायेंगे। इस अध्ययन की आवष्यकता स्पष्ट करती है कि इसका क्षेत्र केवल सुधार और निदान तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रेरणात्मक और लाभदायक प्रकृति का है। बालक के विकास मे उनके साथियों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। वह समूह में रहते हुये ही सामाजिक बोध और आदर्षो को सीखता है, और समाज में एक अच्छे नागरिक के रूप में स्वंय को स्थापित करता है। ऐसा नहीं है कि हमेषा ही प्रत्येक बालक को नैतिकता एवं आदर्षता का पाठ सिखाने वाले सहपाठी मिले। एक समूह में तरह तरह के बालक हो सकते है, और प्रत्येक बालक की विषेषतायें अन्य बालकों को व्यक्तिगत या समूह रूप में प्रभावित करती है। इसलिये यह जानना एवं ध्यान रखना अति आवष्यक है कि बालक के सहपाठी कौन है ? उनकी समूह गत्यात्मकता कैसी है ? तथा वे समूह में किस तरह से अपने समय का सदुपयोग करते है ?

4. अध्ययन के उद्देष्य

भाटिया एवं भाटिया के अनुसार – ''उद्देश्यों के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है जो यह नहीं जानता कि उसे कहाँ जाना है? और शिक्षार्थी उस पतवार विहीन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर कहीं

किनारे पर जा लगेगी।''यह शोधकार्य निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखकर किया जा रहा है –

1. बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं उनके संगी–साथियों के समायोजन का अध्ययन करना।
2. बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं एवं उनके संगी–साथियों के समायोजन का अध्ययन करना।

5. षोध परिकल्पना

परिकल्पना का षाब्दिक अर्थ है – पूर्व चिन्तन। यह अनुसंधान की प्रक्रिया का दूसरा महत्वर्पूा स्तम्भ है। इसका तात्पर्य यह है कि किसी समस्या के विष्लेषण और परिभाषीकरण के प्ष्चात उसमें कारणों तथा कार्य कारण के सम्बन्ध में पूर्व चिन्तन कर लिया गया है। अर्थात इस समस्या का यह कारण हो सकता है। प्रस्तुत षोध में निम्न षून्य परिकल्पनाओं को समेषित किया गया है –

1. बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं का उनके संगी–साथियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. शोध समस्या की परिसीमायें –

प्रस्तुत षोधकार्य मध्य प्रदेष राज्य के बैतूल जिले से सम्बन्धित होगा।

7. शोध विधि

शोधकर्ता द्वारा चयनित समस्या वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत आती है जिसमें शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। यह अनुसंधान अध्ययन के विषय की स्थिति को स्पष्ट करता है। वर्णनात्मक अनुसंधानकर्ता का सम्बन्ध केवल तथ्यों को एकत्र करने मात्र से नहीं है

अपितु एक कुशल अनुसंधानकर्ता का लक्ष्य तो विभिन्न चरों में सम्बन्ध ढूँढ़ना एवं भविष्यवाणी करना होता है।

8. जनसंख्याः तथा न्यादर्श

इकाइयों के समूचे समूह को जिसके लिए चर का मान निकालना अभीष्ट है जनसंख्या कहते हैं। शोधकर्ता द्वारा अपने शोध अध्ययन की समस्या के अनुरूप बैतूल जिले के षहरी क्षेत्र में संचालित अषासकीय हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं को शोध समष्टि के रूप में चुना है तथा न्यादर्ष के रूप में बैतूल जिले के षहरी क्षेत्र में संचालित 4 अषासकीय हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों की कक्षा नवमी में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया है।

9. सांख्यिकीय विधि

संकलित प्रदत्तों के तार्किक विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान मानक विचलन क्रान्तिक अनुपात परीक्षण एवं प्रतिषत के द्वारा प्रदत्तों की गणना की गयी है।

10.प्रदत्तों की गणना एवं परिणाम

सारणी संख्या – 1

बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं उनके संगी–साथियों के समायोजन का सांख्यिकीय विष्लेषण

क्रं.	विवरण	छ	ड	ैण्क्ण	ैम्ड	ि दृ त्ंजपव टंसनम	च ढ .05 पर सार्थकता
1.	सर्वोदय हाई स्कूल सदर	80	13.15	2.1174	0.2367	6.46446	सार्थक
2.	संजीवनी हाई स्कूल सदर	80	15.5	2.1048	0.2353		
3.	सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा	80	12.925	2.8497	0.3186		

4.	बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर	80	18.3125	17.193	1.9223		

सारणी संख्या – 2
बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं एवं उनके संगी–साथियों के समायोजन का सांख्यिकीय विष्लेषण

क्रं.	विवरण	छ	ड	ैण्क्ण	ैम्ड	ि दृ त्ंजपव टंसनम	च ढ .05 पर सार्थकता
1.	सर्वोदय हाई स्कूल सदर	80	13.2375	2.1888	0.2447	5.67782	सार्थक
2.	संजीवनी हाई स्कूल सदर	80	14.5	3.2296	0.3611		
3.	सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा	80	12.3875	3.4732	0.3883		
4.	बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर	80	17.8625	17.288	1.933		

प्रस्तुत षोध में बैतूल जिले के षहरी क्षेत्र में संचालित हाई स्कूल स्तर के विद्यालय एवं इनसे सम्बन्धित मानवीय स्रोतों को चर के रूप में सम्मिलित किया गया तथा षोध हेतु निर्धारित उद्देष्यों के आधार पर निर्मित परिकल्पनाओं की जांच की गयी।

सारणी संख्या – 6 के विश्लेषण से प्राप्त होता है कि बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों मे से बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर में अध्ययनरत छात्रों एवं उनके संगी–साथियों का समायोजन सबसे बेहतर पाया गया तथा सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा बैतूल में अध्ययनरत छात्रों एवं उनके संगी–साथियों का समायोजन सबसे कम पाया गया।

सारणी संख्या – 7 के विश्लेषण से प्राप्त होता है कि बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों मे से बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर में अध्ययनरत छात्राओं एवं उनके संगी–साथियों का

समायोजन सबसे बेहतर पाया गया तथा सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा बैतूल में अध्ययनरत छात्राओं एवं उनके संगी–साथियों का समायोजन सबसे कम पाया गया।

11. परिकल्पनाओं का परीक्षण

सारणी संख्या–1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं उनके संगी–साथियों के समायोजन के अन्तर्गत सर्वोदय हाई स्कूल सदर बैतूल के प्राप्तांकों का मध्यमान 13.15, मानक विचलन 2.1174 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.2367 है, जबकि संजीवनी हाई स्कूल सदर बैतूल में अध्ययनरत छात्रों एवं उनके संगी–साथियों के समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान 15.5, मानक विचलन 2.1048 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.2353 है, सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा बैतूल में अध्ययनरत छात्रों एवं उनके संगी–साथियों के समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान 12.925, मानक विचलन 2.8497 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.3186 है, तथा बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर में अध्ययनरत छात्रों एवं उनके संगी–साथियों के समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान 18.3125, मानक विचलन 17.193 तथा माध्य मानक त्रुटि 1. 9223 है। इनका एफ–अनुपात मूल्य 6.46446 जो कि च ढ .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। उक्त सारणी के विष्लेषण से प्राप्त होता है कि बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों मे से बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर में अध्ययनरत छात्रों एवं उनके संगी–साथियों का समायोजन सबसे बेहतर पाया गया तथा सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा बैतूल में अध्ययनरत छात्रों एवं उनके संगी–साथियों का समायोजन सबसे कम पाया गया, जबकि सारणी संख्या–2 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं एवं उनके संगी–साथियों के समायोजन के अन्तर्गत सर्वोदय हाई स्कूल सदर

बैतूल के प्राप्तांकों का मध्यमान 13.2375, मानक विचलन 2.1888 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.2447 है, जबकि संजीवनी हाई स्कूल सदर बैतूल में अध्ययनरत छात्राओं एवं उनके संगी–साथियों के समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान 14.5, मानक विचलन 3.2296 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.3611 है, सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा बैतूल में अध्ययनरत छात्राओं एवं उनके संगी–साथियों के समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान 12.3875, मानक विचलन 3.4732 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.3883 है, तथा बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर में अध्ययनरत छात्राओं एवं उनके संगी–साथियों के समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान 17.8625, मानक विचलन 17.288 तथा माध्य मानक त्रुटि 1.933 है। इनका एफ–अनुपात मूल्य 5.67782 जो कि च ढ .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। उक्त सारणी के विष्लेषण से प्राप्त होता है कि बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों मे से बालाजी पब्लिक स्कूल खंजनपुर में अध्ययनरत छात्राओं एवं उनके संगी–साथियों का समायोजन सबसे बेहतर पाया गया तथा सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा बैतूल में अध्ययनरत छात्राओं एवं उनके संगी–साथियों का समायोजन सबसे कम पाया गया, जो कि च ढ .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, अतएव परिकल्पना – बैतूल जिले के अषासकीय हाई–स्कूल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं का उनके संगी–साथियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को अस्वीकृत किया जाता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *एण्डरसन, आर0एल0 एवं बेनराफ्ट, टी0ए0, "स्टेटिस्टिकल थियरी ऑफ रिसच", न्यूयार्क, मैक ग्रा हिल बुक कम्पनी, 1962*
2. *अग्निहोत्री, रविन्द्र , "भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ," दिल्लीः रिसर्च पब्लिकेशन्स इन सोशल साइन्सेस, 1956*

3. अस्थाना, विपिन , "मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी", आगरा–2, विनोद पुस्तक मंदिर, 1986.
4. भट्टाचार्य, एस, "फाउन्डेशन ऑफ एजूकेशन एण्ड एजूकेशनल रिसर्च", बड़ौदा, 1968.
5. भारत सरकार नई दिल्ली, "प्रोग्राम ऑफ एक्सन नेशनल पॉलिसी आन एजूकेशन",नई दिल्ली, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 1986,
6. गैरेट, एच. ई, "स्टेटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशन,", बम्बई वैकिल्स फीफर एण्ड सीमंस प्रा0लि0, 1969.
7. मेहता. सी.एस., "इण्डियन साइक्लॉजीकल", रिव्यू, वॉल्यूम 22 नं. 1, पृष्ठ 1–5, 1982
8. प्रधान, "जर्नल ऑफ साइक्लोजी रिसर्च", वाल्यूम 21 नं. 1, पृष्ठ 178–184, 2016.
9. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी. एन. "मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी", विनोद पुस्तक मंदिर, रांगेय राघव मार्ग, आगरा, 2004.
10. वीडेकर, बी. एच., "हाऊ टू राइट एसाइन", मेंट, रिसर्च पेपर, डिजर्टेसन एण्ड थीसिस, न्यू देहली, कनक पब्लिकेशन, 1999.